shrIlakShmIchandralAmbAShTottarashatanAmastotram

श्रीलक्ष्मीचन्द्रलाम्बाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

Document Information

Text title : lakShmIchandralambA 108 names

File name : lakShmIchandralAmbA108str.itx

Category : aShTottarashatanAma, devii, lakShmI, devI

Location : doc_devii

Transliterated by : Jonathan Wiener wiener78 at sbcglobal.net

Proofread by : Jonathan Wiener wiener78 at sbcglobal.net, NA

Latest update : July 18, 2017

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

June 13, 2021

sanskritdocuments.org

श्रीलक्ष्मीचन्द्रलाम्बाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

ॐ श्रीचन्द्रलाम्बा महामाया शाम्भवी शङ्खधारिणी ।
आनन्दी परमानन्दा कालरात्री कपालिनी ॥ १॥

कामाक्षी वत्सला प्रेमा काश्मिरी कामरूपिणी ।
कौमोदकी कौलहन्त्री शङ्करी भुवनेश्वरी ॥ २॥

खड्गहस्ता शूलधरा गायत्री गरुडासना ।
चामुण्डा मुण्डमथना चण्डिका चक्रधारिणी ॥ ३॥

जयरूपा जगन्नाथा ज्योतिरूपा चतुर्भुजा ।
जयनी जीविनी जीवजीवना जयवर्धिनी ॥ ४॥

तापघ्नी त्रिगुणात्धात्री तापत्रयनिवारिणी ।
दानवान्तकरी दुर्गा दीनरक्षा दयापरी ॥ ५॥

धर्मत्धात्री धर्मरूपा धनधान्यविवर्धिनी ।
नारायणी नारसिंही नागकन्या नगेश्वरी ॥ ६॥

निर्विकल्पा निराधारी निर्गुणा गुणवर्धिनी ।
पद्महस्ता पद्मनेत्री पद्मा पद्मविभूषिणी ॥ ७॥

भवानी परमैश्वर्या पुण्यदा पापहारिणी ।
भ्रमरी भ्रमराम्बा च भीमरूपा भयप्रदा ॥ ८॥

भाग्योदयकरी भद्रा भवानी भक्तवत्सला ।
महादेवी महाकाली महामूर्तिर्महानिधी ॥ ९॥

मेदिनी मोदरूपा च मुक्ताहारविभूषणा ।
मन्त्ररूपा महावीरा योगिनी योगधारिणी ॥ १०॥

रमा रामेश्वरी ब्राह्मी रुद्राणी रुद्ररूपिणी ।

राजलक्ष्मी राजभूषा राज्ञी राजसुपूजिता ॥ ११॥

लक्ष्मी पद्मावती अम्बा ब्रह्माणी ब्रह्मधारीणी ।
विशालाक्षी भद्रकाली पार्वती वरदायिणी ॥ १२॥

सगुणा निश्चला नित्या नागभूषा त्रिलोचनी ।
हेमरूपा सुन्दरी च सन्नतीक्षेत्रवासिनी ॥ १३॥

ज्ञानदात्री ज्ञानरूपा रजोदारिद्र्यनाशिनी ।
अष्टोत्तरशतं दिव्यं चन्द्रलाप्रीतिदायकम् ॥ १४॥

॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सन्नतिक्षेत्रमहात्म्ये
श्रीचन्द्रलाम्बाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

Jonathan Wiener wiener78 at sbcglobal.net

shrIchandralA+ambA

shrIlakShmIchandralAmbAShTottarashatanAmastotram

pdf was typeset on June 13, 2021

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*